अप्रैल-मई, 2023

बातूनी

अंक-130

अप्रैल-मई, 2023

बातूनी

अंक-150

दिगन्तर विद्यालय द्वारा
प्रकाशित

संपादक मंडल
हेमन्त शर्मा
नीरतमल पारीक
गुणमाला जैन
मंजू सिंह

परामर्श
रीना दास

कम्प्यूटर सैटिंग
ख्यालीराम स्वामी

कम्पोजिंग
गणपत सैन

सम्पर्क (मुख्य कार्यालय)

दिगन्तर
टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियान रोड़,
जगतपुरा, जयपुर-302017
Email : vidyalay@digantar.org
www.digantar.org

इस अंक में...

- बातूनी की बात 3
- गुब्बारा 4
- तीन दोस्त 5
- तितली रानी 6
- राजा की शादी 7
- वफादारी 8
- चंदा मामा 9
- हाथी 10
- डॉगी 11
- कछुआ और चील 12
- गप्प सुनो 13
- शेर राजा 14
- चंदा 15
- गर्मी आई 16
- खरगोशों का राज 17
- परिवार 18
- दिगन्तर 19
- आसमान में कितने तारे 20
- भारत में जब हुई लड़ाई 21
- प्यारा मोर 22
- फिर क्यों करता टांय–टांय 23
- गरीब लड़के 24
- जादुई फल 25
- ईमानदार किसान 26
- खरगोश और लोमड़ी 27

मुख्य आवरण : स्वाति, समूह–मेहन्दी
पिछला आवरण चित्र : फोटो कॉलाज
बॉर्डर बनाया : काजल, समूह–खुशबू

बातूनी की बात

प्यारे बच्चो!

जैसा कि आप सभी को पता है कि अब मौसम बदल रहा हैं। सर्दियां खत्म हो चुकी हैं। गर्मी ने अपनी दस्तक दे दी है। हमें अभी से बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है, क्योंकि मौसम में बदलाव आ रहा है। हमें गर्मी लगती है तो हम अपना सिर पानी से भिगो लेते हैं। यह हमें बहुत नुकसान पहुंचाता है। हम पोलीथीन की थैली में बंद ठण्डा पेय पदार्थ पी लेते हैं। यह भी हमें नुकसान पहुंचाते हैं। इनसे हम बीमार हो सकते हैं। इन चीजों से हमें बचने की जरूरत है। जैसा कि आपको पता है कि कोरोना दोबारा फैल रहा है। हमें सावधान रहने की जरूरत है। जैसे मास्क लगाना, नाक व मुंह को बार–बार नहीं छूना, खांसी, बुखार व जुकाम होने पर अपनी जाँच करवाना। इन सभी बातों का हमें ध्यान रखना ही होगा। मुझे आशा है कि आप सभी इन सभी बातों का ध्यान रखोगे।

आप की रचनाएं मुझे मिल रही हैं। इसी तरह आप नई–नई रचनाएं मुझे भेजते रहना।

आपकी प्यारी बातूनी।

गुब्बारा

गुब्बारा आया, गुब्बारा आया,
कितना प्यारा गुब्बारा आया।
उड़ता–उड़ता गुब्बारा आया,
सभी रंग का गुब्बारा आया।
गुब्बारा आया, गुब्बारा आया,
बच्चे भी इसको लेते हैं,
बड़े भी इसको लेते हैं।
मुझको भी यह पसंद है,
कितने प्यारे गुब्बारे हैं।
गुब्बारा आया, गुब्बारा आया।
कितना प्यारा गुब्बारा आया,
उड़ता–उड़ता गुब्बारा आया।
संक्रांति पर गुब्बारे उड़ाते हैं,
गुब्बारों को हम फुलाते हैं।
गुब्बारा आया, गुब्बारा आया,
कितना प्यारा गुब्बारा आया।

– कौशल्या, समूह–सागर

तीन दोस्त

एक बहुत घना जंगल था। वहां तीन दोस्त रहते थे। उनके नाम भालू, गधा व चिड़िया थे। तीनों मिल–जुल कर रहते थे। वहीं पास में एक नदी बहती थी। उस नदी में तीन बत्तखें रहती थीं। तीनों के नाम सीता, गीता और रीमा था। नदी के पास ही एक पेड़ था। पेड़ पर एक तोता रहता था। एक दिन उस जंगल में एक मोर आया। मोर ने तोते से कहा कि, "मैं भी तुम्हारे साथ पेड़ पर रह सकता हूं।" तोते ने कहा, "ठीक है", अब तोता और मोर भी दोस्त बन गए। एक दिन वे दोनों मिलकर तीनों बत्तखों के पास गए। उनसे कहा, "तुम हमें अपना दोस्त बना लो।" बतखें इस बात के लिए तैयार हो गई। अब पांचों मिलकर बहुत मजे करते थे। साथ–साथ खेलते और गाना गाते। एक दिन गधा, भालू और चिड़िया उदास बैठे थे। तोते ने पूछा, "आप उदास क्यों हो ?" वह बोले, "हमारे पास खेलने के लिए कुछ भी नहीं है।" हम सारा दिन परेशान हो जाते हैं। तोते ने कहा तुम हमारे साथ खेल सकते हो। वह तीनों बहुत खुश हो गये। तोते ने उन तीनों को सभी से मिलवाया। अब वे सभी मिलकर खेलने लगे और खुशी–खुशी रहने लगे।

– सुहाना, समूह–सागर

तितली रानी

तितली रानी आओ ना,
इतना भी मत इठलाओ ना,
पंख तुम्हारे लाल–पीले,
फूल हमारे नीले–पीले,
झटपट तुम आती हो,
झटपट तुम गायब हो जाती हो।
फूलों पर तुम जाती हो,
फूलों का रस चूसती हो,
बच्चे भागे तुम्हारे पीछे,
तुम इठलाकर उड़ जाती हो।
जब तुम हाथ में आती हो,
कितनी सुन्दर दिखती हो,
फूलों पर तुम ऐसे बैठती हो,
जैसे फूलों की महारानी हो।

– काजल, समूह–खुशबू

राजा की शादी

राजा–रानी की शादी में,
हम चलेंगे बारात में,
मैं भी आई, भाई भी आया, आए नाना–नानी,
आए चाचा–चाची।
हम सब आ गए बारात में।
राजा–रानी की शादी में हम चलेंगे रात में,
मैं भी नाची, भाई भी नाचा, नाचे नाना–नानी,
नाचे चाचा–चाची, नाच पड़े सभी बारात में।
राजा–रानी की शादी में हम चलेंगे रात में,
मैंने खाया, खाया भाई ने,
नाना–नानी, चाचा–चाची टूट पड़े खाने पे,
राजा–रानी की शादी में।

– फिजा, समूह–खुशबू

वफादारी

एक गांव था। उस गांव में एक हवेली थी। उस हवेली में जाने से सब डरते थे। एक दिन श्याम नाम का लड़का उस हवेली में गया तो उसने वहां बहुत सारे चोर देखे। जब उन चोरों को श्याम दिखा तो वे बोले यहां से चला जा वरना हम तेरे पापा–मम्मी को मार देंगे। वह डर गया और वहां से चला आया। उस दिन से उदास रहने लगा। वह किसी से कुछ भी नहीं बोलता था। ऐसा कई दिनों तक चलता रहा। एक दिन उसको मम्मी–पापा ने बुलाया और कहा कि बेटा हम कई दिनों से देख रहे हैं कि तू उदास लग रहा है। खा पी भी ठीक से नहीं रहा है। उसने हवेली वाली बात उनको बता दी। तब उसके मम्मी पापा ने पुलिस को फोन किया और पुलिस उन चोरों को पकड़ कर ले गई। अब श्याम और उसके मम्मी–पापा खुशी–खुशी रहने लग जाते हैं।

– तरुण सिंह, समूह–रोशनी

चंदा मामा

नील गगन के चंदा जी,
ठाठ बड़ा दिखलाते हो,
सोने जैसा रूप लिए,
राजा बन चलते हो,
पंख नहीं तुमको फिर भी,
पंछी बन उड़ जाते हो,
ढूंढ़ो बीच सितारों के,
जंगल नदी पहाड़ों पर,
घूमते रात बिताते हो,
याद करें हम सब तो,
छत पर खेलने आते हो,
तुम हम सब के मामा,
प्यार से तुम मुस्काते हो।

– सुमन, समूह–खुशबू

हाथी

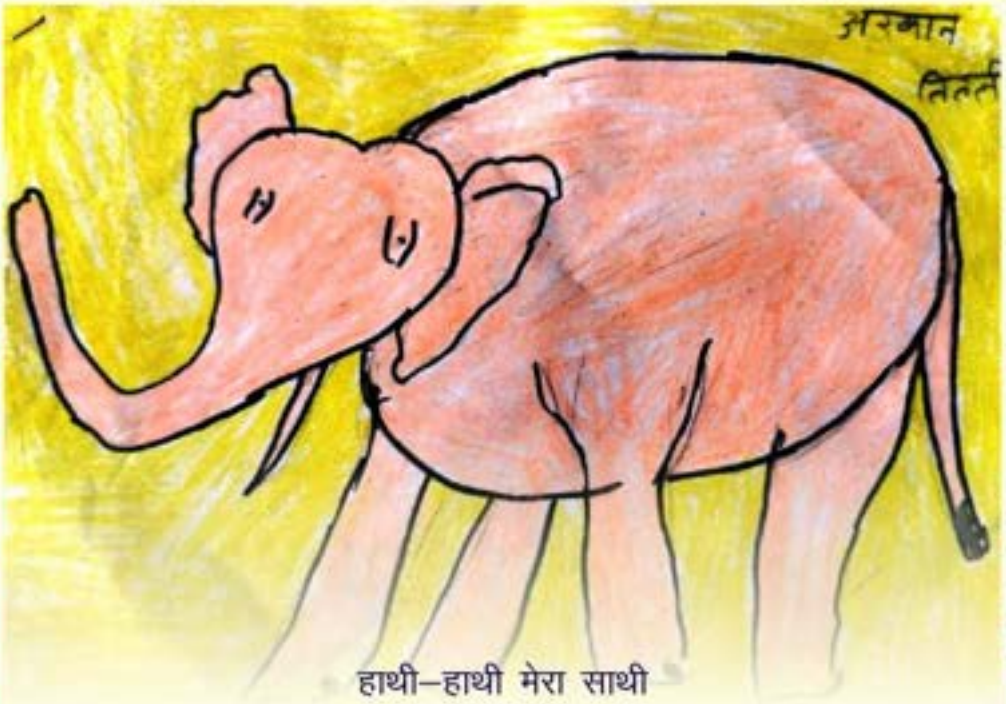

हाथी–हाथी मेरा साथी
सूंड हिलाता चलता हाथी।
हमें खिलाता, हमें झुलाता
सूंड भरकर हमें नहलाता।
केले खाता, गन्ने खाता,
सारे फल वह चट कर जाता।
कान इसके बड़े–बड़े,
दाँत इसके कितने लम्बे।
आँखें कितनी छोटी–छोटी,
नाक तो इसकी सबसे लम्बी ।
हाथी आता धम्मक–धम्मक, बच्चे खुश होते झमक–झमक।

(तितली समूह के बच्चों द्वारा मिलकर बनायी गई कविता)

डॉगी

एक डॉगी बेचारा, कैसे बैठा है बेचारा।
उसका खाना बड़ा प्यारा, अरे वाह–वाह–वाह।
रसोई में जाता, वहां चक्कर लगाता, भौं–भौं करके सबको डराता।
बिल्ली देख उसके पीछे पड़ जाता, भौं–भौं करके सबको दौड़ाता।
दौड़ा–दौड़ा कर जंगल जाता, शेर को देखकर वह डर जाता।
डर कर वापस घर आ जाता, चुप होकर वह बैठ जाता।
एक डॉगी बेचारा, कैसे बैठा है बेचारा।

– मोहम्मद जैद, समूह–तितली

कछुआ व चील

एक बार की बात है। एक कछुआ था। वह पानी में रहता था। एक दिन एक चील आसमान में उड़ रही थी। उसने कछुए को देखा, वह उसे खाना चाहती थी। जैसे ही कछुआ पानी के बाहर आता वह उस पर झपट्टा मारती। कछुआ वापस पानी के अंदर चला जाता था।

एक दिन कछुआ पानी में तैर रहा था। चील ने आकर उसे उठा लिया। लेकिन कछुआ बहुत भारी था। चील उसे उठाकर ज्यादा नहीं उड़ पाई और वह डगमगा कर पानी में गिर गई। चील के पंख गीले हो गए। वह उड़ नहीं पा रही थी। वह पानी में डूबने लगी। कछुए ने उससे कहा कि तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ मैं तुम्हें नदी किनारे ले चलता हूं। चील उसकी पीठ पर बैठ गई कछुआ उसे नदी किनारे ले गया। इस तरह कछुए ने चील की जान बचाई। चील ने उसे बहुत धन्यवाद दिया और उसकी दोस्त बन गई।

– निशा, समूह–तितली

गप्प सुनो

एक बार हम तीन दोस्तों ने एक साँप को देखा। साँप बहुत बड़ा और काला था। हम तीनों ने उसको पकड़ लिया और उस साँप को बैग में रख लिया। जब घर जाकर देखा तो हम तीनों दोस्तों की पेंट में से एक–एक साँप निकला।

– मोहित, मुन्ना, सचिन, समूह–मेहँदी

एक बार मैं दोस्तों के साथ घूम कर आया तो हमारी ट्रेन स्टेशन से जा चुकी थी। तभी मैंने देखा कि एक लगभग दो साल की लड़की टेबल पर बैठ कर रो रही थी। मैं उस लड़की को अपने साथ ले आया और सोचा शायद यह अपने माता–पिता से बिछड़ गई है, रात का समय था। मैं उसे अपने साथ घर ले आया और सुबह पुलिस में रिपोर्ट लिखवाने के बारे में सोच कर सो गया। जब मैं सुबह उठा तो पाया कि रसोई से आवाजें आ रही थी। मैंने जल्दी से जा कर देखा वहां कोई 16–17 साल की एक लड़की बर्तन साफ़ कर रही थी। लेकिन छोटी बच्ची वहां नहीं थी। ये वही छोटी बच्ची रातों–रात 16–17 साल की लड़की बन चुकी थी।

– मोहित, मुन्ना, सचिन, समूह–मेहँदी

एक बार मैंने शेर की गर्दन और हाथी के दांत तोड़ दिए और बन्दर की पूंछ काट दी। ये देखकर खिलौने की दुकान वाले ने मुझे दुकान से बाहर कर दिया।

– फैसल, समूह–मेहँदी

शेर राजा

शेर है शेर है,
कितना सुंदर शेर है,
गुफा में यह रहता है,
हड्डी मांस खाता है,
शेर जब दहाड़ता है,
जंगल पूरा हिल जाता है,
शेर है शेर है कितना सुंदर शेर है,
जंगल में जब शिकारी आते,
शेर दौड़कर उनको भगाते,
शेर शिकार करता है,
जबड़े से उसे पकड़ता है,
शेर है शेर है कितना सुंदर शेर है।

– शिवम, समूह–रोशनी

चंदा

चंदा मामा आओ ना,
सब्जी रोटी खाओ ना,
पानी पीकर जाओ ना,
मेरे घर भी आओ ना,
मीठी–मीठी बातें सुनाओ ना,
चंदा मामा आओ ना,
हमारे साथ खेलो ना,
चंदा मामा आओ ना,
खीर पूरी खाओ ना,
सारी दुनिया की सैर कराओ ना,
सबको लौरी सुनाओ ना,
चंदा मामा आओ ना,
सब्जी रोटी खाओ ना।

– काजल, समूह–खुशबू

गर्मी आई

देखो बच्चो गर्मी आई, धूप कड़ाके की है छाई,
गर्म हवा जोरों से चलती,
पैरों में है बहुत जलती,
रात हुई छोटी, दिन हुआ भारी,
दिन में सोते हैं नर और नारी,
तन से बहुत पसीना बहता,
पंखा चलने से सुख मिलता,
भूख नहीं लगती है ज्यादा,
थोड़े में ही पेट भर जाता,
बर्फ बहुत ही मन को भाती,
शरबत से ठंडी हो जाती छाती,
सड़कें होती सुनसान,
बच्चे दुबक पड़े अपने मकान,
गर्मी आई गर्मी आई, देखो बच्चो गर्मी आई।

– इंद्र,समूह–रोशनी

खरगोशों का राज

एक गांव में खरगोशों का ही राज था। उस गांव में राजा भी खरगोश और नेता भी खरगोश ही होते थे। वहां दूसरे गांव से एक सियार आया और बोला मेरे गांव में बहुत सारे दुश्मन हैं, क्या मैं यहां रह सकता हूं ? एक खरगोश बोला, इसके लिए इजाजत लेनी पड़ेगी। सियार बोला मुझे किससे इजाजत लेनी पड़ेगी ? तब खरगोश ने कहा कि हमारे राजाजी से इजाजत लेनी पड़ेगी। सियार ने पूछा कि राजाजी कहां मिलेंगे ? खरगोश बोला कि यहां का कानून बहुत सख्त है, आपको पत्र लिखना पड़ेगा, जब पत्र राजाजी के पास पहुंचेगा तब उनकी मर्जी है, तुमको गांव में रखें या नहीं रखें। सियार ने कहा कि यदि ऐसा है तो मैं उनसे जरूर मिलूंगा, उसने पत्र लिखा, पत्र पहुंचा तो राजाजी ने सेना को भेजकर सियार को राजगढ़ में बुलाया और बोला क्या लेने आए हो ? सियार ने पूरी कहानी सुनाई। राजा ने तरस खाकर उसे गांव में रख लिया और अपनी सेना में भर्ती कर लिया। सेना में रहते एक दिन सियार ने एक डाकू को पकड़ा तो राजा ने उसे सेना का सेनापति बना दिया। अब शियार राज महल में रहने लगा, बहुत दिन बीत गए। एक दिन सियार ने सोचा कि मैं राजगढ़ से चोरी कर अपने गांव में जाकर बस जाऊं तो पूरी जिंदगी आराम से गुजार लूंगा। वह एक रात को राजा के कमरे में गया और राजा के तकिए से चाबी निकाली और तहखाने में चला गया, उसने वहां खूब सारा पैसा देखा तो खुशी के मारे नाचने लगा। नाचने की आवाज अन्य सेनापति ने सुन ली और सियार को पकड़ लिया। जब बात राजा के पास पहुंची तो राजा ने सेनापति से पूछा, सेनापति ने पूरी बात बता दी। राजा ने सियार को सजा दी और गांव से भी निकाल दिया।

– सोहिल, समूह–रोशनी

परिवार

मुझे मेरी मम्मी अच्छी लगती,
मुझे वो मीठे गीत सुनाती।
मेरे पापा कितने सच्चे,
फल लाते वो अच्छे–अच्छे।
मेरा भैया कितना प्यारा,
रूप सजीला जिसका न्यारा।
मेरी बहना कितनी प्यारी,
हम सबकी वो राज दुलारी।
मेरी दादी कितनी प्यारी,
हमको कहानियां सुनाती न्यारी–न्यारी।

– सुमन, समूह–खुशबू

दिगन्तर

ना कोई भेद, ना कोई अन्तर,
ऐसा स्कूल हमारा दिगन्तर।
लोकतंत्र है इसका मूल मंत्र,
इसलिए, ना कोई भेद ना कोई अन्तर।
भाषाओं का ज्ञान मिला है,
हम सभी को सम्मान मिला है।
दिगन्तर है परिवार हमारा,
इसलिए हमको लगता न्यारा।
हिंसा का स्थान नहीं है,
बातचीत का न्याय सही है।
यहां पर कोई गैर नहीं है,
आपस में कोई बैर नहीं है।
दोस्ती का रिश्ता है हमारा,
इसलिए लगता हमको प्यारा।
ना कोई भेद, ना कोई अन्तर,
ऐसा है हमारा दिगन्तर।

(मेहंदी समूह के बच्चों द्वारा सृजित कविता)

आसमान में कितने तारे

एक बार एक बच्चे ने रात को सोते समय अपनी माँ से पूछा, "माँ आसमान में कितने तारे हैं ?" माँ बोली, "मुझे नहीं मालुम तुम अपने पापा से पूछो।" बच्चा पापा के पास गया और बोला, पापा मुझे एक सवाल का जवाब चाहिए। पापा बोले हाँ पूछो, बच्चे ने पूछा, "आसमान में कितने तारे हैं ?" बच्चे के पापा को भी जवाब नहीं मालुम था। इसलिए उन्होंने बच्चे से कहा, "कल स्कूल जाओ तब अपने शिक्षक से पूछना"। बच्चा अगले दिन जब स्कूल गया तो शिक्षक से पूछा, "आसमान में कितने तारे है ?" शिक्षक ने जवाब दिया आसमान में अनगिनत तारे हैं। बच्चे ने कहा पर मुझे तो कम ही दिखाई देते हैं। शिक्षक ने जवाब दिया तारे बहुत दूर–दूर तक फैले हुए हैं। इसलिए हमें कम दिखाई देते हैं। सूरज भी एक तारा है और ये हमारी पृथ्वी के नजदीक होने के कारण इसका प्रकाश हम तक पहुँच पाता है। यह जानकर बच्चा खुश हुआ और खुशी–खुशी अपने घर गया।

– खुशबू, समूह–फिजा

भारत में जब हुई लड़ाई

भारत में जब हुई लड़ाई।
जिसमें जीती रानी लक्ष्मी बाई।
रानी लक्ष्मी बाई ने अंग्रेजों को मारा।
अंग्रेजों को खूब नचाया।
इधर–उधर सारे भागे।
रानी ने तलवार उठाई, खूब जोर से उसे चलाई।
एक मिनट में गर्दन उड़ाई।
रानी से डर कर अंग्रेज भागे।
लेकिन रानी अपनी जान न बचा पाई।

– विजय योगी, समूह–आँगन

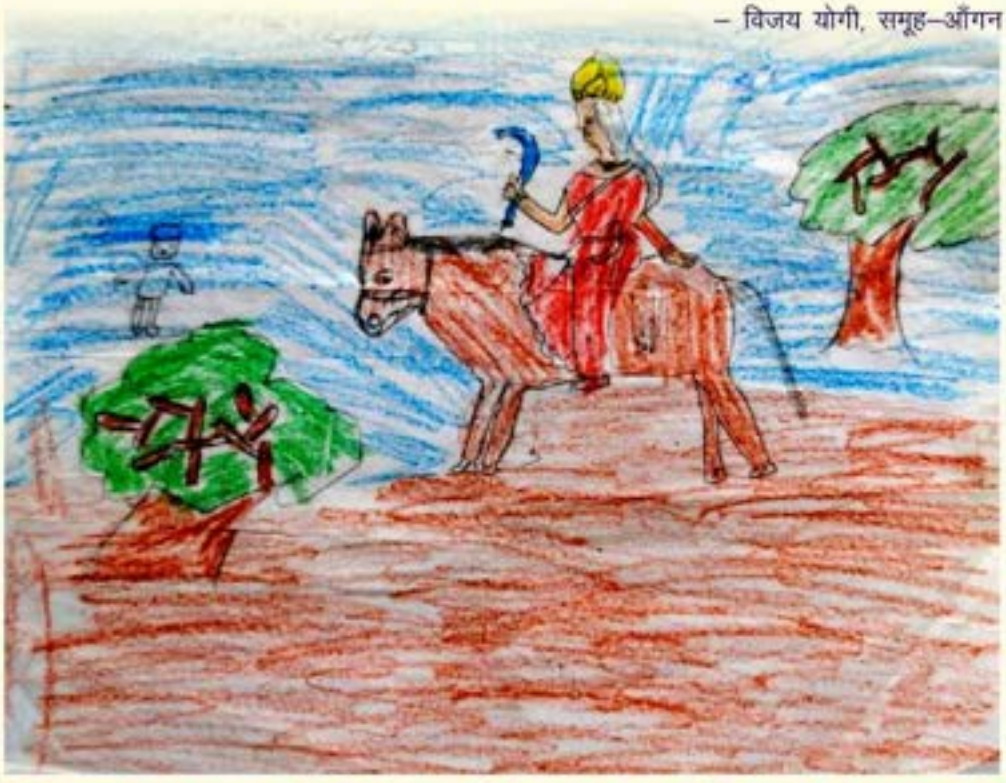

प्यारा मोर

अच्छा मोर प्यारा मोर, सबको नाच दिखाता मोर,
जब बारिश आती है, पंखों को फैलाता मोर,
पीहू–पीहू बोल बोलकर, सबका दिल लुभाता मोर,
हमारा दिल करता है, हम भी बन जायें मोर,
और नाचे वैसे, जैसे– नाचे छम–छम मोर,
अच्छा मोर प्यारा मोर, सबको नाच दिखाता मोर,
जब जब नाचे मोर, तब तब लोग मचायें शोर,
आओ खुशी से हम सब नाचें–गायें और झूमें यार,
देखो–देखो कितना प्यारा, कितना सुन्दर मेरा मोर,
अच्छा मोर प्यारा मोर, सबको नाच दिखाता मोर।

– भरत कुमार, समूह–खुशबू

फिर क्यों करता टांय–टांय

मीट्ठु तेरे कितने पांव ?,
भईया मेरे दो ही पांव।
फिर क्यों करता टॉय–टॉय।
मीट्ठु तेरे कितने गाँव ?,
भईया मेरे एक ही गाँव।
फिर क्यों करता टॉय–टॉय।
तुझे सुहाती किसकी छांव ?
बैठा हूँ जिस पेड़ की छांव,
फिर क्यों करता टॉय–टॉय।
मीट्ठु चलना है चटगाँव ?
नहीं जाना है मुझे मठगाँव,
फिर क्यों करता टॉय–टॉय।

(परी समूह के सभी बच्चों के द्वारा एक–एक वाक्य बोलकर बनाई गई कविता)

गरीब लड़के

एक गांव था। गांव का नाम नगर था। उस गांव में दो लड़के रहते थे। वे बहुत गरीब थे। उनकी मां काम करने जाती थी। एक दिन उनकी मां की तबीयत खराब थी। दोनों बेटे काम पर थे। काम से आते ही उन्होंने पूछा, "मां क्या बात हुई", मां ने बोला, "बेटा मेरी तबीयत बहुत खराब है।" दोनों बेटे बोले मां हम दवाई लेने जा रहे हैं। दोनों बेटे दवाई लेकर घर आ गए, एक बेटा बोला मां उठ जाओ। हम आपके लिए दवाई लेकर आ गए हैं। फिर, दूसरे बेटे ने मां को दवाई दी। मां की तबीयत सही हो गई, फिर हंसते–हंसते दोनों बेटे और मां काम पर चले गए।

– इशिका, नवीन, जानवी, आशीष समूह–उजाला

जादुई फल

एक बार की बात है। एक गांव में एक आदमी रहता था। वह बहुत गरीब था। एक दिन वह आदमी बगीचे में गया। बगीचे में उसे एक पेड़ दिखाई दिया। उस पेड़ पर बहुत सारे फल दिखाई दिए। आदमी बहुत सारे फल घर पर ले आया। आदमी ने बहुत सारे फल खाए। एक आखरी फल बचा, वह फल बहुत चमक रहा था। जब उस आदमी ने फल के हाथ लगाया, उसमें से एक परी निकल कर सामने खड़ी हो गई। परी ने आदमी से पूछा तुम्हें क्या चाहिए ? गरीब आदमी ने कहा मुझे भूख लग रही है, मुझे खाना दे दो। परी ने उस आदमी को खाना दे दिया और उसे कुछ कपड़े दे दिए। अब वह आदमी खुशी–खुशी रहने लगा।

– समायरा, समीर, अरमान समूह–उजाला

ईमानदार किसान

एक गांव का जमींदार बहुत लालची था। बिना लालच के तो वह पत्थर को भी इधर से उधर नहीं करता। एक दिन जमींदार के घर एक साधु आया। साधु भूखा था। साधु ने भोजन मांगा। जमींदार को मजाक सूजी और उसने भैंस के खाने के भोजन में से एक कटोरी लाकर साधु को दे दिया। साधु गुस्सा हो गया और उसने जमींदार को श्राप दे दिया कि तुम अभी पत्थर बन जाओ। जमींदार घबरा गया और साधु के पैरों में गिर पड़ा, माफी मांगने लगा। साधु ने कहा अब कुछ नहीं हो सकता। अब तो जब तुम्हारे गांव में कोई ईमानदार व्यक्ति आ जाये और वह तुम्हें छूलेगा तो तुम फिर से इंसान बन जाओगे। यह कह कर साधु चला गया। बहुत दिन बाद एक नेक और ईमानदार गरीब आदमी जमींदार के पास से गुजर रहा था। तभी उसका हाथ पत्थर से बनी मूर्ति से लग गया और मूर्ति इंसान बन गई। मूर्ति को इंसान बनता देख वह घबरा गया और कहने लगा यह क्या हो गया। तभी जमींदार ने उस आदमी को अपनी पूरी बात बताई। जमींदार उसे अपने घर ले जाकर काम पर रख लिया। जमींदार ने फिर कभी ऐसा मजाक नहीं किया व लालचीपन को छोड़ने की कसम खाई और लोगों की मदद करने में लग गया।

– विकास, समूह–आँगन

खरगोश और लोमड़ी

एक बहुत बड़ा जंगल था। इस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। वहां पर एक खरगोश भी रहता था। उसे गाजर बहुत पंसद थी। वह रोजाना बाजार जाता और गाजर खरीद लाता। एक दिन उसने सोचा क्यों ना मैं अपने ही जंगल में गाजर उगा लू। खरगोश ने अपने ही जंगल में गाजर उगाई और कुछ दिनों बाद गाजर बड़ी हो गई। अब खरगोश जंगल में से रोजाना गाजर खाने लगा। एक दिन यह बात लोमड़ी को पता चल गई। लोमड़ी चालाक थी। लोमड़ी खरगोश के जंगल में घुस गई और पूरी गाजरों को उखाड़ दी। अगले दिन जब खरगोश ने देखा तो उसे एक भी गाजर दिखाई नहीं दी। खरगोश जोर–जोर से रोने लगा। उसका रोना देखकर लोमड़ी को बहुत दुःख हुआ। उसने खरगोश से गाजर फिर से उगाने की बात कही और खरगोश सहमत हो गया। दोनों ने मिलकर खेत में फिर से गाजर उगाई और कुछ दिनों बाद गाजर की फसल तैयार हो गई। उन्होंने खुद भी गाजर खाई और जंगल के सभी जानवरों को भी खिलाई।

(परी समूह के सभी बच्चों के द्वारा एक–एक वाक्य बोलकर कहानी बनाया।)